नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

ऑपरेशन सिंदूर : न्यायिक संकल्प की अवधारणा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को लोकसभा में अपने भाषण के माध्यम से 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विपक्ष के सवालों का जोरदार खंडन किया. उन्होंने भारत की बदलती सैन्य और रणनीतिक सोच का एक व्यापक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया. यह भाषण सिर्फ एक औपचारिक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि भारत की सुरक्षा नीति, राजनीतिक इच्छाशक्ति और आतंकवाद के खिलाफ 'न्यायिक प्रतिशोध' के सिद्धांत की वैचारिक पुष्टि थी.

विपक्ष ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर सवाल उठाते हुए इसे 'चुनावी स्टंट', 'संवैधानिक प्रक्रिया से बाहर की सैन्य कार्रवाई' और 'लोकतांत्रिक जवाबदेही से विमुख' करार दिया. उन्होंने पूछा कि क्या संसद को पहले विश्वास में लिया गया था, क्या कूटनीतिक विकल्प समाप्त हो गए थे और क्या भारत अब जवाबी प्रतिशोध के रास्ते पर चल पड़ा है. इन सवालों को अक्सर राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील मुद्दे को राजनीतिक गलियारों में घसीटने के प्रयास के रूप में देखा गया. इस पृष्ठभूमि में, प्रधानमंत्री का भाषण एक स्पष्ट संदेश था कि भारत अब पुरानी 'सहिष्णुता की परिभाषाओं' में बंधा नहीं रहेगा.

प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष के हर आरोप का तथ्यात्मक और भावनात्मक दोनों स्तरों पर करारा जवाब दिया. उन्होंने स्पष्ट किया कि 'ऑपरेशन सिंदूर' कोई आकस्मिक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि महीनों की खुफिया तैयारी, अंतर-मंत्रालयी समन्वय और रणनीतिक परिपक्वता का परिणाम था. उन्होंने कहा, 'हमने पहले शांति का हाथ बढ़ाया, लेकिन जब निर्दोषों का रक्त बहा, तो भारत मौन नहीं रह सकता.' जाहिर है संवैधानिक और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के पालन पर प्रधानमंत्री ने जोर दिया. उन्होंने संसद को जानकारी देने की प्रक्रिया को अनिवार्य बताते हुए कहा, 'इस सदन का सम्मान करते हुए मैं स्वयं उपस्थित हूँ. यह सरकार जवाबदेह है और हर प्रश्न का उत्तर देने को तत्पर है. दरअसल, सरकार ने 'प्रतिशोध' नहीं, बल्कि 'न्यायिक संकल्प' की अवधारणा को परिभाषित किया है. यह प्रतिघात आतंकवाद के विरुद्ध था, किसी धर्म, राष्ट्र या समूह के विरुद्ध नहीं. प्रधानमंत्री ने कहा, 'हमारे लक्ष्य आतंक के अड्डे हैं, निर्दोषों पर आक्रमण नहीं . हम सीमा पार जाकर आतंक के आकाओं को यह संदेश दे चुके हैं कि भारत अब चुप नहीं रहेगा. प्रधानमंत्री का वक्तव्य यह भी दर्शाता है कि भारत अब 'रणनीतिक धैर्य' के स्थान पर 'सक्रिय रक्षा' की नीति अपनाने को तत्पर है. 'ऑपरेशन सिंदूर' भारत की सैन्य क्षमताओं, विशेष बलों की दक्षता और खुफिया तंत्र की परिपक्वता का भी प्रमाण है. यह देश की उस 'न्यू नॉर्मल' की अभिव्यक्ति है जो उरी और बालाकोट के बाद भारत ने सैन्य रणनीति के रूप में अपनाई है.

बहरहाल,लोकतंत्र में प्रश्न पूछना आवश्यक है, लेकिन जब प्रश्न राजनीतिक पूर्वग्रह से प्रेरित हों और राष्ट्रीय सुरक्षा पर धुंध पैदा करें, तब उत्तर केवल भाषण नहीं होता— उत्तर होता है नेतृत्व शक्ति और प्रामाणिकता. प्रधानमंत्री मोदी ने मंगलवार के अपने भाषण में यह सिद्ध कर दिया कि भारत का नेतृत्व अब न तो अनिर्णय में डगमगाता है और न ही अंतरराष्ट्रीय आलोचना के भय से अपने संकल्प को शिथिल करता है. दरअसल, ऑपरेशन सिंदूर कोई एक सैन्य अभियान भर नहीं था. यह भारत की आत्मा पर लगे आघात का उत्तर था,संयम और निर्णायकता के साथ. लोकसभा में प्रधानमंत्री का उत्तर उस चेतना का राजनीतिक अनुवाद था जो अब भारत की नई पहचान बन रही है कि, शांति की आकांक्षा, लेकिन आत्मरक्षा में असंदिग्ध प्रहार.

सामाजिक समरसता के सूत्रधार तुलसीदास

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू, शिमला

रामभक्ति शाखा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं. इनका प्रमुख ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस भारत में ही नहीं वरन् सम्पर्ण विश्व में विख्यात है. यह भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करनेवाला एक ऐसा निर्मल दर्पण है, जो सम्पूर्ण विश्व में एक अनुपम एवं अतुलनीय ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाता है.

भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके. बुध्द समन्वयकारी थे, गीता में समन्वयवाद को अपनाया गया है, तुलसी भी समन्वयवादी थे. तुलसीदास जी का अविर्भाव ऐसे युग में हुआ, जब धर्म, समाज और राजनीति के क्षेत्रो में सर्वत्र पारास्परिक वैषम्य एवं विभेद का ताण्डव नृत्य हो रहा था. तत्कालीन संत कवि सारे भारत में भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे . गोस्वामी जी उन्ही सन्त कवियों में से एक थे जिन्होंने तत्कालीन परिस्थिति का गहराई से अध्ययन एवं अनुशीलन करके समाज में व्याप्त विषमता एवं वैमनस्य को दूर करने का प्रयत्न किया गोस्वामी जी ने इस विकृत रूप को दूर करने के लिए समन्वयात्मक बुध्दि से काम लिया .

इस समन्वय के लिए तुलसी ने सामाजिक, पारिवारिक, अध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रो को चुना और इनमे समन्वय स्थापित करते हुए जन – जीवन में व्याप्त तत्कालीन घोर अशांति एवं अत्याचार आदि को दूर करने की सफल चेष्टा की. इसीलिए उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा से ओत – प्रोत कहा जाता है और इसी समन्वयात्मक दृष्टिकोण के कारण ही तुलसीदास जी को 'लोकनायक' कहा जाता है . सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों का सबसे बडा उदाहरण राम का शबरी के प्रति निश्छल प्रेम है. एक चक्रवर्ती सम्राट और एक महर्षि से एक अछूत केवट की भेंट का जैसा वर्णन अयोध्याकांड में मिलता हैं, वह हमारी आँखें खोल देने वाला दृश्य है.

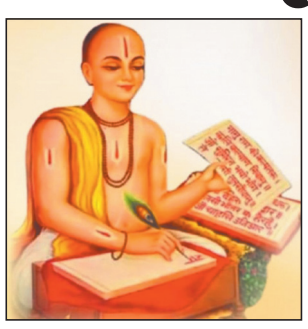

तुलसी के राम सबल की अपेक्षा निर्बल का, बड़े की अपेक्षा छोटे का, ऊंचे की अपेक्षा नीचे का, अमीर की अपेक्षा गरीब का पक्ष लेते हैं. वे सदैव दीन- हीन- वंचित- उपेक्षितों के साथ खड़े रहते हैं. सुग्रीव भले ही बहुत सदुणी नहीं है. जो दुर्गुण बाली में हैं, वे ही न्यूनाधिक उसमें भी हैं. पर वह बाली का सताया हुआ है. अत्यंत भयभीत हैं. तो राम, सुग्रीव के साथ खड़े होते हैं. इसीलिए तुलसीदास कहते हैं कि, हे राम ! आपकी यही तो बड़ाई है कि आप धनिकों, गणमान्यों का तो अनादर करते हो और गरीबों को आदर देते हो.

भारतीय जनमानस पर रामचरितमानस का सकारात्मक प्रभाव पड़ा; जिसका कारण तुलसी की लोक चिंता थी . उनके काव्य में समाज के विभिन्न धाराओं और संस्कारों का सुंदर समन्वय मिलता है. उन्होंने राम के चरित्र के माध्यम से आदर्श समाज को स्थापित किया. तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के माध्यम से समाज को नैतिकता एवं सदाचार का आदर्श पाठ पढ़ाया. तुलसी के राम आदर्श चरित्र के नायक है. राम का आदर्श व्यवहार सबको लुभाता है. राम एक आदर्श भाई,आदर्श पुत्र ह, आदर्श मित्र और आदर्श शत्रु भी है. तुलसी की लोक साधना भले ही ऊपर से भक्ति परख लगती हो, लेकिन उसके मूल में आदर्श समाज की सपना और आदर्श मानव का चरित्र है.

'श्रीरामचरितमानस' में तुलसी ने व्यक्ति, परिवार, समाज राज्य, राजा, प्रशासन, मित्रता, दाम्पत्य एवं भ्रातृत्व आदि का जो समाज का पथ – प्रदर्शन करता रहा है 'विनयपत्रिका' ग्रन्थ में ईश्वर के प्रति इनके भक्त ह्रदय का समर्पण दृष्टिगोचर होता है. इसमे एक भक्त के रूप में तुलसीदास ईश्वर के प्रति दैन्यभाव से अपनी व्यथा – कथा कहते है. तुलसी की भक्ति राम के प्रति अनन्यभाव की है . जैसे चातक और बादल का प्रेम होता है . ठीक उसी प्रकार तुलसी की भक्ति चातक जैसी है जिसे केवल राम ही का बल हैं, उन्हीं पर उनका आस और विशवास टिका है – वे लोकहित एवं समन्वय भाव से युक्त महाकवि थे . भाव – चित्रण, चरित्र – चित्रण एवं लोकहितकारी आदर्श के चित्रण की दृष्टि से इनकी काव्यात्मक प्रतिभा का उदाहरण सम्पूर्ण – विश्व – साहित्य में भी मिलाना दुर्लभ है .

गोस्वामी तुलसीदास ने रामभक्ति के द्वारा न केवल अपना ही जीवन कृतार्थ किया बल्कि समूची मानव जाति को श्रीराम के आदर्शों से जोड़ दिया. उन्होंने सामान्य जनता के दु:खों, कष्टों और समस्याओं को निकट से देखा था तथा उनका अनुभव भी किया था. अत: उन्होंने समाज में चैतन्य एवं जागृति के निर्माण का बीड़ा उठाया. वे समाज के सजग प्रहरी थे. उन्होंने समाज-सुधार के पावन उद्देश्य से राम भक्ति की सुरसरि प्रवाहित की और कायरता, निराशा, आत्महीनता आदि की भावनाओं को मिटाकर साहस का संचार किया. तत्कालीन समाज का मानसिक स्तर ज्ञान की उपादेयता को समझने में असमर्थ था, इसलिये उन्होंने भक्ति की पावनधारा से समाज को संजीवन शक्ति प्रदान की.

यूपीआई लेन-देन पर शुल्क न लगाया जाए

देश में यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस) की सुविधा लागू होने से तत्काल डिजिटल भुगतान प्रचलित व लोकप्रिय हो गया. इस वजह से लोगों ने पास में कैश रखना काफी कम कर दिया. गत माह 24 लाख करोड़ रुपये के 1,840 करोड़ यूपीआई लेन-देन हुए. यह इसलिए संभव हो पाया क्योंकि केंद्र सरकार ने दिसंबर 2019 में लेन-देन पर सभी शुल्क खत्म कर दिए थे. इसे बैंकिंग की भाषा में मर्चेंट डिस्काउंट रेट या एमडीआर कहते हैं. इसके पहले बैंक 2,000 रुपये तक के डिजिटल लेन-देन पर 0.25 प्रतिशत चार्ज वसूल करते थे और यदि इससे अधिक रकम का लेन-देन हुआ तो 0.65 प्रतिशत चार्ज वसूल किया जाता था. उस समय 100 रुपये का सामान यूपीआई से खरीदने पर दुकानदार को 0.25 रुपये का नुकसान होता था. तब दैनिक आवश्यकताओं के लिए यूपीआई लोकप्रिय नहीं था. एमडीआर हटाने के बाद हर कोई यूपीआई पसंद करने लगा. पिछले 5 वर्षों में लेन-देन 14 गुना बढ़ गया. अभी भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर ने यूपीआई को लेकर कहा कि यूपीआई के इस्तेमाल की कुछ लागत तो चुकानी होगी. इसे उपयोगकर्ता चुकाए या सामूहिक रूप से चुकाई जाए. यह संकेत है कि यूपीआई पर फिर से शुल्क लगाया जाएगा. वैसे वित्त मंत्रालय ने गत माह कहा कि एमडीआर लागू नहीं किया जाएगा और यह सिर्फ अटकलबाजी है. बैंकों का कहना है कि हर यूपीआई लेन-देन में उनको खर्च उठाना पड़ता है. उन्हें मिलता कुछ नहीं बल्कि रोज करोड़ों भुगतान से निपटना पड़ता है. दूसरी ओर तथ्य यह है कि पिछले 5 वर्षों से सरकार सार्वजनिक हित में यूपीआई चलाने के लिए बैंकों को हर 100 रुपये के लेन-देन पर 15 पैसे भुगतान कर रही है. यदि बैंकों को यूपीआई की वजह से घाटा होता है तो इसमें भाग लेनेवाले बैंकों की संख्या 143 से बढ़कर 675 कैसे हो गई. बैंक कर्ज देने और बीमा के लिए ग्राहकों को लुभाने के उद्देश्य से खुद यूपीआई का इस्तेमाल करते हैं. यदि बैंकों ने एमडीआर को पुन: लागू करने का निर्णय लिया तो इससे यूपीआई की स्वीकार्यता में कमी आ जाएगी और लेन-देन में नकदी का चलन बढ़ जाएगा. मार्च माह में 37 लाख करोड़ रुपये नकद चलन में थे. नकद चलन बढ़ा तो अधिक नोट छापने की नौबत आ जाएगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

चंबल की दो पीढ़ियों ने नहीं देखी ऐसी बारिश, बदइंतजामी की इंतहा...

हरीश दुबे

ग्वालियर चंबल अंचल में इस बार जल विभीषिका से हालात इस कदर खराब होंगे, इसका अनुमान स्थानीय प्रशासन को नहीं था, यदि ऐसा होता तो हजारों लोगों को इस तरह मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ता. विपक्ष के साथ ही प्रभावित ग्रामीणों की एक बड़ी आबादी प्रशासन पर घोर लापरवाही बरतने, महीनों पहले से बाढ़ नियंत्रण के इंतजाम सिर्फ कागजों पर करने और मीटिंगों की औपचारिकता में वक्त जाया करने के आरोप लगा रही है. बदइंतजामी छिपाए नहीं छिप रही. लेकिन प्रशासन के जिम्मेदारों के अपने तर्क हैं. अफसरों का कहना है कि मौसम की बेरूखी के आगे वे विवश हैं. चंबल क्षेत्र में बरसात ने इस बार नब्बे साल का रिकॉर्ड तोड़ा है. पड़ौस में स्थित उप्र और राजस्थान के बांधों से भारी तादाद में पानी छोड़े जाने के चलते इस अंचल की चंबल, क्वारी, सिंध, पार्वती, छोन्दा, बैशली, नौन आदि नदियों के उफनने की बात भी कही जा रही है. तोहमत भले ही एक दूसरे पर टालकर पल्ला झाड़ने की कोशिश की जाए लेकिन जमीनी हकीकत यही है कि अतिवर्षा और बाढ़ के कारण हालात बेहद गंभीर हो गए हैं. इतने गंभीर कि शिवपुरी और गुना में बाढ़ में फंसे लोगों को महफूज निकालने के लिए झांसी से सेना की एक बटालियन बुलानी पड़ी है.

अपने संसदीय क्षेत्र के तीनों जिलों में आई बाढ़ में फंसे लोगों के सुरक्षित रेस्क्यू के लिए केंद्रीय मंत्री सिंधिया खुद मॉनिटरिंग कर रहे हैं. पिछले एक सप्ताह के भीतर नदियों में डूबकर, वज्रपात और मकान गिरने से करीब एक दर्जन से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है. खरीफ सीजन की पूरी फसल बर्बाद हो गई, सो अलग. फौरी जरूरत प्रभावित लोगों तक तत्काल इमदाद पहुंचाने के साथ अभी से ऐसे इंतजाम करने की है ताकि भविष्य में ऐसे दुखद प्रसंगों की पुनरावृत्ति नहीं हो.

सपा को 28 की चुनौतियों के लिए मुकम्मल बनाने की कवायद

उप्र में भाजपा के मुकाबले सपा के कमजोर पड़ने का असर ग्वालियर चंबल में भी पार्टी के वजूद पर पड़ा. ग्वालियर सपा में हर साल अध्यक्ष बदलते रहे और जनाधार खिसकने के साथ ही संगठन कमजोर पड़ने के चलते संभाग की सियासत में पार्टी हाशिए पर सिमटती गई. अब पार्टी में नई जान फूंककर उसे 28 की चुनौतियों के लिए मुकम्मल बनाने पर काम चल रहा है. चूंकि पार्टी कल पहली अगस्त को मप्र विधानसभा का घेराव करने जा रही है लिहाजा पार्टी के स्टेट जनरल सेक्रेटरी रणवीर सिंह यादव ग्वालियर में ही डेरा डालकर यहां से सैकड़ों की तादाद में कार्यकर्ताओं के जत्थों को भोपाल ले जाने में जुटे हैं. उन्होंने सूबा सदर को इस घेराव कार्यक्रम में सबसे बड़ी भागीदारी ग्वालियर चंबल से होने का भरोसा दिलाया है.

धूमधड़ाका जन्मदिन का, नजर टिकट पर

ग्वालियर निगम के सभापति मनोज तोमर ने इस बार अपना जन्मदिन जिस कदर धूमधाम से मनाया, उसके बाद ग्वालियर दक्षिण सीट से सत्तारूढ़ दल की तरफ से टिकट पर दावेदारी जता रहे नेताओं में चिंता है. वे यही मानकर चल रहे हैं कि यह सब धूमधड़ाका 28 के चुनाव के लिए टिकट की स्पर्धा में अभी से अपनी दावेदारी के संकेत देने के लिए था. भाजपा दक्षिण सीट से चार बार नारायण सिंह को टिकट दे चुकी है. कुछ अंतराल छोड़कर वे लगातार मंत्री भी रहे हैं. हालांकि दक्षिण में दावेदारों की लंबी फेहरिस्त है लेकिन मनोज तोमर के शुभचिंतक उम्मीद से हैं.

महल के बजाए संगठन के प्रति वफादार रहने का फिर मिला इनाम

ग्वालियर शहर कांग्रेस के लंबे समय तक अध्यक्ष रहे डॉ. दर्शन सिंह जीवन पर्यन्त जिलाध्यक्ष रहने के साथ महल के प्रति आस्थावान रहे. उनके असमय निधन के बाद इंग्लैंड से एमबीए की पढ़ाई कर आए उनके बेटे मितेंद्र सिंह ने विरासत संभाली और युवक कांग्रेस के कार्यकारी जिलाध्यक्ष से लेकर प्रदेशाध्यक्ष और दो बार राष्ट्रीय सचिव रहे. मितेंद्र सिंह अपने पिता की तरह खुद को महल और महाराज के प्रति आस्थावान नहीं रख सके. हालांकि मितेंद्र को कांग्रेस की सदस्यता 2017 समारोहपूर्वक सिंधिया ने ही दिलाई थी लेकिन जब कमलनाथ सरकार को गिराकर सिंधिया ने अपनी टीम के साथ भगवा चोला पहन लिया तो मितेंद्र सिंह ने उनके साथ जाने के बजाए कांग्रेस में ही रहना उचित समझा. इस वफादारी के एवज में पार्टी भी उन्हें पार्टी संगठन में बड़े पदों से नवाज रही है. पार्टी ने अब मितेंद्र सिंह को युवक कांग्रेस का राष्ट्रीय महासचिव बनाया है. युवक कांग्रेस के इस शीर्ष पद पर पहुंचने वाले ग्वालियर चंबल के वे पहले नेता हैं.

निशानेबाज

जयराम रमेश ने किया वाजपेयी को याद मोदी का अटल से अलग अंदाज

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि वाजपेयी एक अलग पीएम थे और उस वक्त एक अलग भाजपा थी. हमें लगता है कि बदलते वक्त से जयराम तालमेल नहीं बिठा पा रहे हैं और अतीत के अंधेरे में अटक और भटक रहे हैं. उन्हें मोदी खटक रहे हैं.

हमने कहा, हर नेता की अपनी खूबी या विशेषता होती है. सबका अपना-अपना व्यक्तित्व होता है. वाजपेयी स्वप्नदर्शी कल्पनाशील कवि हृदय नेता थे जबकि मोदी प्रैक्टिकल नेता हैं. अटल अपनी कविता में ऐलान करते थे- तन भी हिंदू, मन भी हिंदू ! मोदी ने ऐसी घोषणा करने की बजाय राम मंदिर बनवाने, जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटवाने, 3 तलाक के खिलाफ कानून बनवाने जैसे कदम उठाएं. समान नागरी कानून की दिशा में कदम बढ़ने लगे हैं. उत्तराखंड की धामी सरकार ने इसे लागू भी कर दिया. अटल ने पाकिस्तान से लगी सीमा एलओसी पर सेना तैनात की थी लेकिन मोदी ने सेना को पाकिस्तान के अंदर घुसकर आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद करने का फ्री हैंड दिया. आतंक को चूर-चूर करने के लिए ऑपरेशन सिंदूर हुआ.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, अटलबिहारी वाजपेयी के भाषण सम्मोहित करने वाले हुआ करते थे. नानाजी देशमुख, दत्तोपंत ठेंगड़ी, गोविंदाचार्य जैसे संघ के नेताओं को वाजपेयी की कार्यशैली पसंद नहीं आती थी. अटल के रहते आडवाणी का पीएम बनने का अरमान पूरा नहीं हो पाया. एक बार खुद वाजपेयी ने कहा था कि लोग मेरे बारे में कहते हैं कि अटल अच्छा है लेकिन उसकी पार्टी गलत है तो बताइए इस अच्छे अटल का आप करेंगे क्या ? अटल ने कहा था कि मैं ऐसी सत्ता को चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा जो जोड़तोड़ से हासिल की जाती है.

हमने कहा, वाजपेयी मस्तमौला थे और संघ के अनुशासन के दायरे में बंधे हुए नहीं थे. आज मोदी इतने शक्तिशाली हो गए हैं कि उनको बीजेपी की जरूरत नहीं है बल्कि बीजेपी को मोदी की जरूरत है. उन्होंने पीएम के रूप में इंदिरा गांधी का रिकार्ड पार कर लिया. उनके सामने विपक्ष विभाजित है और बीजेपी की अधिकांश राज्यों में सरकार है. ऐसी हालत में बीजेपी 2029 में भी मोदी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव लड़ सकती है. मोदी के मन की बात सुनिए और उनके विजन को देखिए जो 2047 तक भारत को विश्व में नंबर वन बनाने का लक्ष्य रखते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह मत भूलिए कि अटल-आडवाणी बीजेपी की नींव के पत्थर रहे हैं. विजन तो वाजपेयी का भी था तभी तो वह कहते थे काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूं, गीत नया गाता हूं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11979 - डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. रोग की पहचान (डायग्नोसिस) (सं.) 2. राजा की पत्नी, स्त्रियों के लिए आदर सूचक शब्द 3. झरोखा, खिड़की (सं.) 4. दक्खिन, दक्षिण भारत 5. वह बात जो कही न जा सके, अवर्णनीय 8. जगमगाना, प्रकाशित होना, कीर्ति लाभकरना 10. कामदेव की पत्नी 11. देवता, सूर्य, स्वर, ध्वनि 12. मद्य, मदिरा (सं.) 13. पक्षियों का मधुर शब्द करना, उमंग में या प्रसन्न होकर अधिक बोलना 14. घर, मकान, सभा या अधिवेशन का स्थान (हाउस) (सं.) 16. सुंदर, प्रिय, रमने वाला विलास, क्रीड़ा (सं.) 17. करघे पर तागों से कपड़ा तैयार करना 19. एक कृष्ण भक्त स्त्री जिसे विषपान करना पड़ा था 21. जूते आदि बनाने वाला कारीगर 22. प्रत्येक, एक-एक नाश करने वाला

बाएं से दाएं

1. वह सिद्धांत की संसार केवल बुराइयों से ही परिपूर्ण है, संसार की केवल बुरी अवस्था को ही देखना (पेस्सीइज्म) 5. उत्तम, स्वस्थ, निरोग 6. दान करने वाला, उदार 7. कुछ जानने के लिए बार-बार ताकने या झांकने की क्रिया, छिपकर देखने की क्रिया 8. चुनने का कार्य, संचय (सं.) 9. तह, परत 11. पुष्प, सुहृदय (सं.) 12. उत्तम नीति, भक्त ध्रुव की माता का नाम (सं.) 13. आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य या उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथ, दूत (सं.) 14. यात्रियों के ठहरने का स्थान (उर्दू) 15. एक प्रसिद्ध देवर्षि 18. न्यूनता 20. श्रीकृष्ण, मन को मोहने वाला 23. परमात्मा, विष्णु 24. विदीर्ण करना, फाड़ना

Solution 11978

प्र	ध्या	■	च	ल	■	शो	र
जा	ल	■	प	ता	■	भा	व
■	■	■	ल	ड़	■	■	■
ज	ग	ह	■	■	त	ट	स्थ
ग	ह	रा	■	■	स	ब	ल
■	■	■	पा	स	■	■	■
आ	यु	■	ग	ली	■	भू	ख
ध्या	■	■	ल	ब	■	रा	त

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा में अरूचि व व्यवधान होगा, अधिकारी के कोप का सामना करना पड़ेगा, मित्रों से बैचारिक मतभेद रहेगा, वर्ष के मध्य में प्रियजनों के सहयोग से कार्यो में सफलता मिलेगी, शासन सत्ता का लाभ नवीन योजनाओं में पूँजी निवेश होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यहां सहयोग मिलेगा, सिंह राशि के व्यक्तियोंको निजी क्षेत्र में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारी के आदेश का पालन करना होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होने का योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, मिलनसार, धार्मिक हृष्टपुष्ट, स्वस्थ्य एवं निरोगी होगा. बुद्धि से तीव्र और कुशाग्र होगा. स्वतंत्र विचारधारा का होगा, 24 वर्ष के बाद भाग्योदय होगा. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

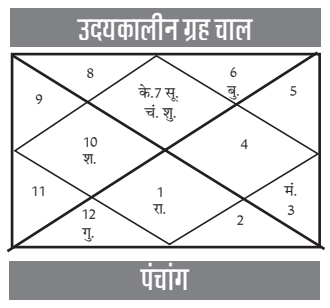

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल सप्तमीं गुरूवासरे रात 3/57, चित्रा नक्षत्रे रात 1/2, साध्य योगे दिन-रात, गर करणे सू.उ. 5/24 सू.अ. 6/36, चन्द्रचार कन्या दिन 11/52 से तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल सप्तमीं को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, कपास, वस्त्र, खली, बिनौला, सफेद रंग की वस्तुओं की तेजी होगी, बादाम, वृषभ, छुहारा, इमली, के भाव में नरमी के साथ तेजी होगी, आज पिछले दिन के भाव रहेंगे. भाग्यांक 8352 है.

मेष- महत्वपूर्ण कार्य आसानी से बन सकते हैं, धर्म कर्म और आध्यात्मक में मन लगेगा, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

वृषभ- कार्यों की अधिकता से मन खिन्न रहेगा, नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा, अचानक धनलाभ प्राप्त होगा, यश मिलेगा. नियमितता का ध्यान रखें.

मिथुन- विवादग्रस्त मामले सामने आयेंगे, जिनका समाधान समझदारी से होगा, नियोजित कार्य सफल होगा, मानसिक प्रसन्नता होगी.

कर्क- व्यवसाय के प्रति सचेत रहकर कार्य करें, भाई या मित्र के कारण संबंधों में तनाव आ सकता है, पारिवारिक सुख मिलेगा, हर्ष बना रहेगा.

सिंह- अधिनस्थों की मदद से महत्वपूर्ण कार्य बनेगा, किसी धार्मिक अनुष्ठान करने का मन बनेगा, किसी लंबी यात्रा हेतु तैयार रहें, आर्थिक मामलों में सावधानी रखें.

कन्या- विरोधी पक्ष सक्रिय रहेगा, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही ठीक नहीं होगी, ऐसी कोई घटना घट सकती है, जो आपके लिये हितकारी रहेगी, यश प्राप्त होगा.

तुला- बनते कार्य बिगड़ सकते हैं, परिस्थितियों का सामना करने में कामयाबी मिलेगी, रिश्तेदारी को लेकर वाद विवाद हो सकता है, संयम से काम लेना उचित होगा.

वृश्चिक- व्यवसाय में नवीन साझेदारी प्रस्ताव सामने आयेंगे, धन लाभ होगा,संतान की चिन्ता रह सकती है, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

धनु- माता को कष्ट हो सकता है, संतान के कार्यों में विशेष खर्च होगा, पारिवारिक जबावदारी रहेगी, मानसिक संतोष रहेगा. नवीन योजना बनेगी.

मकर- आपके प्रयासों से सबकुछ अनुकूल रहेगा, जमीन कोर्ट कचहरी आदि के कार्यों में अवरोध दूर होगा, अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा.

कुम्भ- यात्रा योग टालना लाभकारी है, खानपान की गड़बड़ी से स्वास्थ्य शिथिल रहेगा, मान सम्मान में वृद्धि होगी. पुराना पैसा प्राप्त होने से खुशी होगीं.

मीन- आज कारीबारी यात्रा लाभदायक रहेगी, धन वसूलने में सफलता मिलेगी, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी, मनोविनोदपूर्ण कार्यो में सफलता मिलेगी.

SUDOKU 7111

		5			3			
	2			9	5			
9						6		
			9				3	5
	6						7	
4	8				1			
		7						3
			2	4			9	
			8			2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7110

2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2